के स्पेशल मैंशन के साथ आपने को सम्बध्य करता हूं । साथ ही इस सदन के माध्यम से सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि यह समस्या बहुत गम्भीर समस्या है और अगले कुछ दिनों में और गम्भीर हो जायेगी । कमला सिन्हा जी ने बिल्कुल सही कहा है कि सौ साल पुरानी नदी से सिंचाई के साधन मुहैया किये गये थे । अंग्रेजों के जमाने में यह तय हुआ था । उसी समय से यह साधन सिंचाई का वहां पर है । बिहार के इस इलाके में पिछले कुछ वर्षों से, 15-20 वर्षों से, सामाजिक तनाव बना हुआ है और यह नक्सलवादी आन्दोलन का इलाका है । एक तरफ सरकार का ध्यान इस आन्दोलन को समाप्त करने की तरफ जाना चाहिए था, सामाजिक तनाव को खत्म करने की तरफ जाना चाहिए था वहां दूसरी ओर इस पानी की कमी के चलते यह आन्दोलन और प्रखर होगा, उग्र होगा और सामाजिक तनाव भी बढ़ेगा । इसलिए यह सिर्फ पानी की समस्या नहीं है,बल्कि वहां के सामाजिक जीवन की भी समस्या है । इसलिए मैं चाहूंगा कि केन्द्रीय सरकार इस पर गम्भीरता से सोचे । हम इसको कोई कावेरी की तरह मसला नहीं बनाना चाहते हैं । हम तो इतना ही चाहते हैं कि जो बात तय है उस तयशुदा बात पर काम किया जाय और भारत सरकार दूसरे राज्यों की मदद से, सहयोग से, इसको करने की इजाजत दे ।

श्री रंजन प्रसाद यादव (बिहार): मैं भी अपने आपको इसके साथ एसोसिएट करता हूं ।

Hunger strike by farmers for relief to the flood affected people of Ganganagar, Rajasthan

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, हमारे देश के किसानों का दुर्भाग्य यह है कि चाहे अनावृष्टि हो या बाढ़ हो या अतिवृष्टि हो या सूखा हो, किसानों की मेहनत पर प्रकृति की हर मार पानी फेर देती है । प्रकृति की यह मार जब एक ऐसे प्रान्त पर पड़ती है जो प्रान्त पहले से ही प्राकृतिक मेहरबानियों से विरत रहा हो, जहां पर प्रकृति मेहरबानी करने पर कृपण रही हो, उसी तरह से सरकार की मेहरबानियों पर भी जहां सूखा पड़ा हुआ हो एक ऐसे प्रान्त के किसानों के दुर्भाग्य की ओर मैं आपका, सरकार का और इस सदन का ध्यान आकर्षित करवाना चाहूंगी । पिछले जुलाई महीने में हिमाचल प्रदेश में, पंजाब में और हरियाणा में भयंकर बाढ़ आई और उस बाढ़ के चलते घग्गर नदी में जो बाढ़ आई उसने उसके बगल के सीमावर्ती जिले राजस्थान के गंगानगर को भी बुरी तरह से प्रभावित किया । यह क्षेत्र दो सौ किलोमीटर में फैला हुआ है । इस क्षेत्र में बाढ़ कहर बरपाती रही, तबाही बरपाती रही । हजारों हजार किसानों की खड़ी फसल तबाह हो गई । हमारे देश के प्रधान मंत्री और कृषि मंत्री पंजाब में और हरियाणा में हवाई सर्वेक्षण करने गये । लेकिन बगल के गंगानगर में और राजस्थान में जाने का उनको मौका नहीं मिला या उन्होंने वहां जाना सही नहीं समझा । किस दृष्टिकोण से राजस्थान के साथ यह पक्षपात किया गया, मैं नहीं जानती । वे पंजाब में और हरियाणा में जायें, पंजाब के किसानों को मदद दें, इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है । लेकिन मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहती हूं कि ऐसे प्रान्त के किसानों के साथ जहां प्रकृति की मेहरबानियां नहीं रहती हैं वहां सरकार क्यों अपनी मेहरबानियों का खजाना भी बंद कर देती है, क्यों अपनी मेहरबानियों में कृपण हो जाती है, यह समझ में नहीं आता है ।

गंगानगर के किसानों का मेरे पास एक पत्र आया है जिसमें हमारे वहां के राजस्थान के पूर्व सांसद भी हैं, वे कल से भूख हड़ताल पर बैठ रहे हैं । उनके साथ हजारों हजार किसान भी भूख हड़ताल पर बैठ रहे हैं । इसके पहले उन्होंने 9 अगस्त को प्रदर्शन किया था । उसके बाद फिर 20 अगस्त को उन्होंने आन्दोलन किया । कई हजार की संख्या में गिरफ्तारियां दी । सैकड़ों महिलायें गिरफ्तार हुई । इसके बावजूद हमारी केन्द्रीय सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की । मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी कि राजस्थान के संबंध में कल भी एक बात उठी थी । यह कहा गया था कि चार प्रान्तों के बारे में एडवाइजरी कमेटियां बनी हुई हैं । मुझे सूचना दी गई कि राजस्थान के संबंध में जो कमेटी बनी है उस कमेटी की सदस्य मैं भी हूं । यह कमेटी कहां है, इसका अस्तित्व कहां है, मुझे मालूम नहीं है । उस कमेटी के सदस्य के नाते अगर मुझे बुलाया जाता तो जाहिर है कि उस कमेटी में मैं उस प्रान्त के बारे में कहती । इसलिए इस विशेष उल्लेख के जरिये सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी कि राजस्थान प्रान्त में गंगानगर जिले में हजारों किसान आन्दोलन कर रहे हैं और आज से भूख हड़ताल पर बैठे हुए हैं, कृपया उन किसानों की मांगों पर ध्यान दीजिये । बाढ़ के कारण उन किसानों की फसल को जो नुक्सान हुआ है, हजारों की संख्या में ट्यूबवैल टूट गये हैं । किसान भूखों मर रहा है । तो मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहूंगी कि क्या यह जरूरी है कि जब तक आंदोलनकारी कोई उग्र रास्ता न अख्तियार कर लें जब तक कोई हंगामा खड़ा न हो, तब तक न सुना जाय । बिना इन चीजों के हमारी सरकार को सुनने की आदत नहीं है । इसलिये मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगी कि इससे पहले कि उत्तरत से ज्यादा स्थिति बिगड़े, सरकार हमारे देश के मजदूरों और किसानों की मांगों की ओर ध्यान दे । खासकर हमारे गंगानगर के किसान जो बदतर हालत में आ गये हैं, सरकार की नाफरमानियों और सरकार की मेहरबानियों की कृपण दृष्टि से । इसलिये मैं निवेदन करना चाहूंगी कि किसानों की मांगों पर ध्यान दिया जाय ।

2.00 P.M.

श्री भूपेन्द्र सिंह मान (नामनिर्देशित): मैं एसोशियेट करना चाहता हूं और सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं कि यह जो नेचुरल कैलामिटी है उसको नेशनल कैलामिटी करार देकर, किसानों को पूरा पूरा मुआवजा दिया जाना चाहिये ।

Gastro-enteritis in Madhya Pradesh

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश): उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से केन्द्र सरकार और इस सदन का ध्यान एक गंभीर समस्या की ओर दिलाना चाहता हूं । वैसे तो

सब जानते हैं कि बरसात के दिनों में आंत्रशोथ, हैजा, उल्टी, पीलिया आदि बीमारियां हो जाती हैं। लेकिन मध्य प्रदेश में इस बीमारी ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। अब तक लगभग 300-400 लोगों की आंत्रशोथ की बीमारी से मृत्यु हो चुकी है और लगभग 7-8 हजार लोग इस बीमारी से इस समय पीड़ित हैं। मध्य प्रदेश में लगभग 21-22 जिले और इनके करीब करीब 1500 गांव इस बीमारी से प्रभावित हैं। दवा का कोई इंतजाम नहीं हो रहा है। डाक्टर वहां जा नहीं रहे हैं। हालत यह है कि रोज मृत्युयें हो रही हैं। दो माह से यह क्रम चल रहा है। मैं बताना चाहता हूं कि शिवपुरी में अब तक 50 मौतें हो चुकी हैं और सौ लोग आज भी बीमार पड़े हैं। 36 ग्रामों में यह बीमारी फैली हुई है। गुना जिले के कई गांव इस बीमारी से प्रभावित हैं। वहां 50 लोगों की अब तक मृत्यु हो चुकी है। होशंगाबाद जो राजधानी भोपाल के बिल्कुल निकट है वहां करीब 60 गांव इस बीमारी से प्रभावित हैं और लगभग 10 मौतें वहां हो चुकी हैं। रायपुर, बस्तर इस बीमारी से बहुत अधिक प्रभावित हैं। अकेले अकमलीपारा जो स्वास्थ्य केन्द्र है वहां 17 गांवों में यह भयानक जानलेवा बीमारी फैली हुई है। अब तक करीब 70 लोगों की मौत हो चुकी है। सैकड़ों लोग आज इन बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। वहां लोगों में एक दहशत का वातावरण बनता जा रहा है। लोग घर छोड़कर भाग रहे हैं। वहां जो स्वास्थ्य केंद्र है, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र है वहां कोई स्टाफ नहीं है, दवायें नहीं हैं। वहां के लोगों की स्थिति ऐसी नहीं है कि वे बाजार जाकर दवायें खरीद सकें। वहां बीमारी के कारण रात दिन लोग बहुत परेशान हैं। इसी तरह से दुर्ग में राजहान गांव के सभी गांवों में यह बीमारी बहुत तेजी से फैली हुई है। अब तक तीन सौ से चार सौ मौतें वहां हो चुकी हैं। लेकिन बड़े दुर्भाग्य की बात यह है कि वहां राष्ट्रपति शासन है और इस राष्ट्रपति शासन के दौरान जनता के हितों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जरा सा भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। हालत यह है कि जो यूनेस्को का एक फार्मूला है कि आंत्रशोथ के बाद पानी में गुड़ और नमक डालकर पिलाना चाहिये, इसका भी अगर प्रचार करते तो कुछ होता। लेकिन इसकी भी कोई व्यवस्था नहीं है। दवाओं की हालत यह है कि मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य का जो बजट है, उसमें 82 प्रतिशत पैसा जो है वह कर्मचारियों के लिये है और 17 प्रतिशत पैसा केवल औषधियों में लगता है। 242 स्वास्थ्य केंद्रों में वहां न कोई डाक्टर है, न कोई स्टाफ है। हालत भयंकर है और वहां झगड़ा चल रहा है सलाहकारों के बीच में। जो राज्यपाल महोदय के सलाहकार हैं, उनमें झगड़ा चल रहा है, कोई विद्या भाई का आदमी बना हुआ है। कोई श्यामा चरण का आदमी बना हुआ है, कोई अर्जुन सिंह का आदमी है... (व्यवधान) तुम्हारा कोई नहीं है गुफरान, तुम इस लायक बचे नहीं हो, कोई नहीं है तुम्हारा। कोई विद्याचरण का है। आपस में लड़ रहे हैं। लड़ने के अलावा, ट्रांस्फर के अलावा कोई काम नहीं कर रहे हैं। स्थिति गंभीर है और भयंकर है और शासन...(व्यवधान) मंत्री महोदय इन मौतों पर हंस रहे हैं, सरकार साहब मैं आपसे कहना चाहता हूं, मध्य प्रदेश मे डाक्टरों की टीम भेजिये, दवाइयां भेजिये...(व्यवधान)

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा॰ अबरार अहमद): मैं पूछ रहा था...(व्यवधान)

श्री कैलाश नारायण सारंग: आप हंस रहे हैं। आप लोगों को शर्म आनी चाहिये। आप लोग हंसते हैं। दो-दो, तीन-तीन, चार-चार हजार लोग इस भयंकर बीमारी से प्रभावित हैं, लोग मर रहे हैं, बस्तर में मर रहे हैं, गुना में मर रहे हैं लेकिन आप हंस रहे हैं। जरा केन्द्र के लोगों को चिंता करनी चाहिये और मंत्री महोदय से मैं प्रार्थना करूंगा कि डाक्टरों की टीम भेजें, सर्वे कराएं।

[उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सुषमा स्वराज) पीठासीन हुईं]

उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं यह प्रार्थना करूंगा कि आप इसका सर्वे कराएं और वहां की हालत को ठीक करें। धन्यवाद।

श्री ब्रह्मदेव आनन्द पासवान (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदया, मध्य प्रदेश में जो वाकया हुआ है, मुझे ऐसा लगता है कि मध्य प्रदेश की जनता कहती है कि मुझे दर्द होता है तो सरकार कहती है कि दवा करो। दवा करती नहीं है। फिर जनता कहती है कि मुझे दर्द होता है तो सरकार कहती है कि दुआ करो, भगवान पर भरोसा करो लेकिन दर्द ठीक नहीं होता है। फिर कहती है कि दर्द होता है तो सरकार कहती है कि मरा करो। तो यह वर्तमान सरकार का मतलब है। इसलिए मैं इस स्पेशल मेंशन के साथ अपने आप को संबद्ध करता हूं।

Arrest of Bangladeshis at Bhuk Kutch to Gujart

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात): उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं अपने इस स्पेशल मेंशन की मारफत सरकार का ध्यान एक गम्भीर घटना की ओर खींचना चाह रहा हूं। मैंने इस हाऊस में पहले भी कई बार यह मामला उठाया है। मैं जिस डिस्ट्रिक्ट से आ रहा हूं वह बिलकुल बार्डर पर है और वहां से कच्छ जिले में घुसपैठ होती है। शस्त्र भी वहां से आते हैं, स्मगलिंग तो पहले भी होती थी फिर शस्त्र आने लगे, नारकोटिक्स आने लगे। कई बार मैंने इस सदन में इन बातों को कहा है। आज दिन तक मुझे गृह मंत्री की केवल एक लेटर मिला है कि हम पूरा प्रबन्ध करने जा रहे हैं लेकिन आज तक कुछ भी नहीं हुआ है। केवल आश्वासन हमको मिला है। मैं जो घटना कहने जा रहा हूं वह यह है कि 16 तारीख को 117 बंगलादेशी लोग पूरा देश क्रास करके कच्छ तक आ गये थे, वे डिस्ट्रिक्ट हेडक्वार्टर भुज में पकड़े गये हैं। कई जगहों पर गांवों में घूमते थे। तो यह लोग 10-10, 15-15, 20-20 की तादाद में अलग अलग जगहों से पकड़े गये, एक दिन में पकड़े गये। पुलिस ने उनसे पूछताछ की कि आप कहां से आए हैं और कैसे आए हैं। इनमें से कई लोगों ने बताया कि हम बंगलादेश से आ रहे हैं और अभी हमारे और भी कई साथी हैं जो यहां तक अभी नहीं पहुंचे हैं। उनसे यह पूछा गया कि आपको कौन लाया है, लाने वाले कौन लोग हैं। जब तलाशी चल रही थी तो उनके साथ लाने वाले दो तीन लोग न जिनका मैं नाम नहीं बताना